PART- II POL.SC.(H)
PAPER- IV

Q(1) 1950 से भारत - श्रीलंका संबंधों की विवेचना करें।)

Ans- भारत - श्रीलंका के संबंधों का इतिहास बहुत ही पुराना है। जब कोई भी देश अपनी वैदेशिक नीतियों का निर्माण करता है तो उसे उस वक्त पड़ोसी राष्ट्रों के हितों का विशेष ख्याल रखना पड़ता है। जाहिर है कि भारत - श्रीलंका के मध्य संबंधों में भी यह सिद्धांत पूर्णरूपेण लागू होता है। हरेक राष्ट्र अपने पड़ोसी राष्ट्रों से मधुर संबंध बनाये रखना चाहता है क्योंकि किसी भी देश की राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित घटना का वहाँ के पड़ोसी राष्ट्रों के घटनात्मक या विध्वंसात्मक प्रभाव पड़ता है, खासकर पड़ोसी राष्ट्रों पर तो उसका और भी व्यापक असर होता है। श्रीलंका भी भारत से लगा एक छोटा - सा देश है जिसका भारत से ऐतिहासिक एवं भौगोलिक संबंध काफी गहरा रहा है। 16 वीं सदी से 20 वीं शताब्दी के मध्य तक यह देश यूरोपीय उपनिवेशवादी शक्तियों की गुलामी झेलता रहा! भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग एक वर्ष बाद किसी पड़ी

संतुलन से 4 फरवरी 1948 को मुक्ति ...

सामरिक दृष्टिकोण से भारत-श्रीलंका का महत्व और भी बढ़ जाता है, जिसकी अनदेखी न तो भारत कर सकता है और न श्रीलंका ही, बल्कि वास्तविकता तो यह है कि भारत-श्रीलंका आपसी संबंधों का होना दोनों देशों की एक आवश्यक मजबूरी है। क्योंकि एक सीमा से तो जुड़ते ही हैं, साथ ही साथ दोनों देशों का सदियों से एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव भी है।

तो श्रीलंका की आजादी के प्रथम दशक के वर्षों को हम आदर्श तो नहीं परन्तु सामान्य अवश्य कह सकते हैं। स्वतंत्रता और संप्रभुता का पूर्ण सम्मान करता है। फिर भी वह भारत को शंका की नजर से देखता था। प्रारंभ में यद्यपि वह न तो किसी सैनिक गुट में सम्मिलित हुआ और न ही तटस्थता की नीति से दूर रहा, परन्तु इसका झुकाव पूंजीवादी शक्तियों की ओर अधिक था। इसकी इस नीति के मूल में था,

भारत से भय महसूस करना जो कि उसकी भूल थी। यही कारण था कि श्रीलंका सरकार ने त्रिंकोमाली का नौसैनिक अड्डा और कटुनायके का हवाई अड्डा ब्रिटिश नियंत्रण में रहने को, तत्कालीन प्रधानमंत्री ने उचित ठहराते हुए स्पष्ट किया कि श्रीलंका के प्रति भारतीय साम्राज्यवादियों की महत्वाकांक्षा को ध्यान में रखते हुए ऐसा करना सर्वथा ठीक है। नेहरू के बांडुंग सम्मेलन बुलाने में श्रीलंका ने भारतीय को सहयोग तो दिया था परन्तु उपनिवेशवाद के प्रस्ताव पर तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री से तीखी नोक-झोंक हो गई थी। अन्त में श्री जवाहर लाल नेहरू के हस्तक्षेप से मामला शांत हो सका।

भारत-श्रीलंका के मनमुटाव के दूसरा कारण पाक जलडमरूमध्य में स्थित एक छोटे से द्वीप से संबंधित था। कच्छद्वीप के स्वामित्व को लेकर कुछ विवाद बढ़ गया। पुनः 1956 में भाषा के एकमात्र दर्जा घोषित किया। इससे पहले तमिल भाषा को भी यह स्थान प्राप्त था। अतः भारत मूल के तमिल भाषा लोगों

की अपेक्षा अधिक ने भारत भी
करते भारत की ओर से कोई खतरा
नहीं है। तथा यह कि भारत को वे
एक मित्र राष्ट्र मानते हैं। श्री डी० भंडारनायके
ने यह भी कहा कि वे भारत द्वारा
प्रतिपादित पंचशील सिद्धांतों का समर्थन
करते हैं एवं भारतीय विदेश नीति
की राह पर चलने का अपना इरादा
रखते हैं।

श्रीलंका के प्रधानमंत्री श्री डी०
भंडारनायके की 25 सितंबर 1959 में एक
बौद्ध भिक्षु द्वारा हत्या कर दी गयी।
जिससे दोनों देशों के संबंधों को एक
गहरा धक्का लगा। परन्तु 1960 के
आम चुनाव में श्री भंडारनायके की पत्नी
श्रीमती सिरिमावो भंडारनायके ने प्रधानमंत्री
होते ही भारत श्रीलंका संबंधों को
अपने पति के प्रधानमंत्री काल की
तरह ही पूर्ववत् बनाये रखने का
संकल्प लिया। श्रीमती भंडारनायके 1965
तक अपने पद पर रहीं। श्रीमती
भंडारनायके के प्रधानमंत्री काल में भारत
श्रीलंका संबंधों में कटुता नहीं आई
प्रदान की गई। 1964 के अक्टूबर महीने
2/66 के बाद दोनों देशों के मध्य

समझौता वार्ता कराने में श्रीमती भंडारनायके ने अहम भूमिका अदा की। उनके ही प्रयास से कोलंबो में तटस्थ राष्ट्रों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया तत्पश्चात सम्मेलन द्वारा पारित प्रस्तावों को लेकर वे दिल्ली तथा पीकिंग गयीं।

भारत-श्रीलंका संबंधों को सामान्य बनाने के दो अहम मुद्दे बाधक थे। पहली समस्या प्रवासी भारतीय तथा दूसरा कच्चातिवु द्वीप से संबंधित थी। कच्चातिवु भारत-श्रीलंका के तटों के बीच 200 एकड़ की बंजर भूमि है। दोनों देश इस पर अपना आधिपत्य मानते थे। अतः भारत ने संबंधों को सामान्य बनाने के दृष्टिकोण से इसे लंका को सौंपकर अपनी उदारता का व्यवहार किया। 1964 में श्रीमती भंडारनायके तथा भारत प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के बीच एक समझौता हुआ जो मूलतः प्रवासी भारतीय के हितों से संबंधित था। किन्तु शास्त्री के बीच एक ~~समझौता~~ 1968 में श्रीलंका के प्रधानमंत्री डडले सेनानायके का भारत

आयोजन हुआ जिसने संबंधों को सामान्य बनाने की दिशा में प्रयास किया गया। इस वार्ता से प्रवासी भारतीयों को कुछ राहत मिली। वार्ता द्वारा यह भी तय किया गया कि दोनों देशों के व्यापार का प्रतिनिधिमंडल आपस में एक दूसरे के देशों का दौरा करें ताकि व्यापार का मूल्यांकन एवं फसल बीमा को भी कायम तथा नये आयाम दिये जा सकें। संबंधों की निरंतर बेहतरी के लिए 1977 ई० में श्री मोरारजी देसाई तथा 7 फरवरी 1978 को भारतीय राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी श्रीलंका गये। परन्तु संबंधों में बेहतरी के बजाय तनावपूर्ण ही होता चला गया।

पुनः 1980 में श्रीमती इन्दिरा गाँधी सत्ता पर आसीन हुए और संबंधों को सामान्य बनाने की पहल शुरू की। परन्तु 1983 जातीय दंगे श्रीलंका में भारतीय समर्थक व्यापक पैमाने पर उभर गये और प्रवासी भारतीय पर व्यापक रूप से आक्रमण होने लगा। श्रीलंकाई राष्ट्रपति श्री रणसिंघे प्रेमदासा ने भारत पर यह आरोप लगाया कि भारत ने ही श्रीलंका के साथ संबंधों को तनाव किया है।

शांति सेना ने वहां जाकर बहादुरी के साथ स्थिति सामान्य बनाने का कुशलतापूर्ण कार्य संपन्न किया। इस शांति बहाली मिशन में हजारों शांति सैनिकों को जान से हाथ धोना पड़ा। 2 जनवरी, 1989 को श्रीलंका के राष्ट्रपति पद पर श्री रणसिंघे प्रेमदास ने पदभार ग्रहण किया और शीघ्र ही भारतीय शांति सैनिकों की वहां से वापसी शुरु हो गई। अब सभी शांति सैनिक वहां से वापस लौट आए क्योंकि समझौता में यह कहा गया था कि वहां भारतीय शांति सेना तभी तक रहेगी जब तक कि वहां की सरकार (श्रीलंका) आवश्यक समझेगी। राष्ट्रपति प्रेमदास और भारत के नए प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने दिसम्बर 1991 के सार्क शिखर सम्मेलन के अवसर पर भारत-श्रीलंका के संबंधों को सुधार बनाने के प्रयास पर जोर दिया। ~~प्रेमदस~~ प्रेमदास की हत्या के बाद श्रीमति चन्द्रिका कुमारतुंगा श्रीलंका की राष्ट्रपति बनी। उनके शासनकाल में दोनो देशों के बीच संबंधो में सुधार का प्रयास जारी रहा। दोनो देशो ने मधुरता को पुष्ट ~~कर~~ संबंधो की